12-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - अभी यह रावण राज्य, पुरानी दुनिया खत्म हो नई दुनिया आ रही है इसलिए श्रीमत पर चल पवित्र बनो तो श्रेष्ठ देवी देवता बनेंगे"

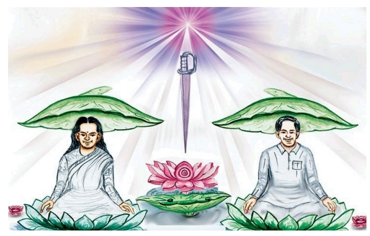

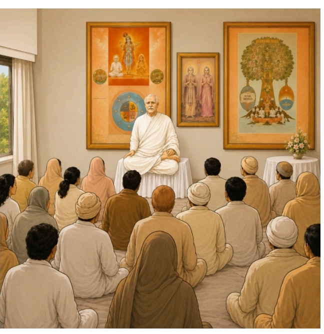

प्रश्नः- बाप अपने बच्चों को सत्य नारायण की कथा सुनाते हैं, उस कथा का रहस्य क्या है?

उत्तर:- उसका रहस्य है - बादशाही लेना और गँवाना। अल्फ को अल्लाह मिला, तो गदाई छोड़ दी। जो विश्व के मालिक थे वही 84 जन्म ले राजाई गँवा देते हैं फिर बाप उन्हें राजाई देते हैं। पतित से पावन बनना, गदाई छोड़ राजाई लेना - यही सच्ची सत्य नारायण की कथा बाप सुनाते हैं।

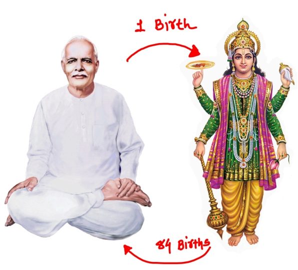

गीत:-आखिर वह दिन आया आज... Click

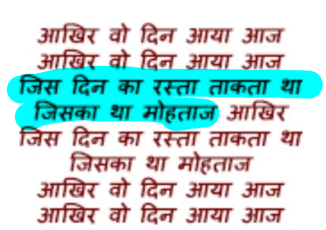
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

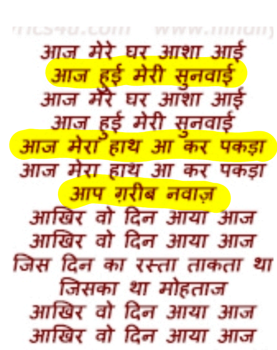
आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आप ग़रीब नवाज़
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

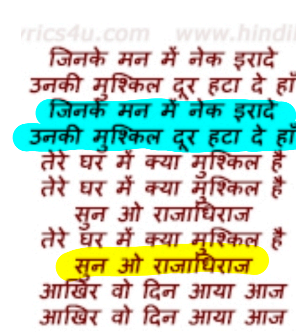
जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
तेरे घर में क्या मुश्किल है
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

"इक हीर थी और था एक राँझा"
कहते हैं मेरे गाँव में
सच्चा हो दिल तो, १०० मुश्क़िलें हों
झुकता नसीबा पाँव में

12-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

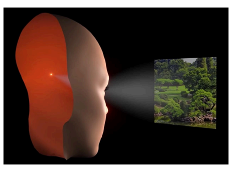

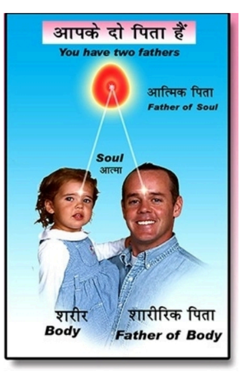

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति का अर्थ तो रूहानी बाप ने समझाया है। ओम् माना अहम् आत्मा हूँ और मेरा शरीर है। आत्मा तो देखने में नहीं आती है। यह समझ में आता है - मैं आत्मा हूँ, यह मेरा शरीर है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। शरीर में बुद्धि नहीं है। आत्मा में ही संस्कार अच्छे वा बुरे रहते हैं। मुख्य है आत्मा। उस आत्मा को कोई देख नहीं सकते हैं। शरीर को आत्मा देखती है। आत्मा को शरीर नहीं देख सकता। जान सकते हैं कि आत्मा निकल जाती है तो शरीर जड़ हो जाता है। आत्मा देखी नहीं जाती है, शरीर देखा जाता है। वैसे ही आत्मा का जो फादर है, जिसको ओ गॉड फादर कहते हैं, वह भी देखने में नहीं आते हैं। उनको समझा जा सकता है, जाना जा सकता है। आत्मायें सब ब्रदर्स हैं। शरीर में आते हैं तो कहेंगे यह भाई-भाई हैं वा भाई-बहिन हैं। आत्माओं का बाप है परमपिता परमात्मा। जिस्मानी भाई-बहिन एक-दो को देख सकते हैं। आत्माओं का बाप सभी का एक है, उनको देख नहीं सकते। तो बाप आये हैं पुरानी दुनिया को नया बनाने। नई दुनिया सतयुग थी, यह पुरानी दुनिया कलियुग है। इनको अब बदलना है। जैसे पुराना घर खत्म हो नया

घर बनता है। वैसे यह पुरानी दुनिया खलास होनी है। सतयुग के बाद त्रेता, द्वापर, कलियुग फिर सतयुग आना जरूर है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होनी है। सतयुग में होता है देवी-देवताओं का राज्य। आधाकल्प चलता है सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। उनको कहा जाता है लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी, राम-सीता की डिनायस्टी। तो यह सहज है ना। फिर द्वापर, कलियुग में और धर्म आते हैं। फिर देवी-देवतायें जो पवित्र थे, वह अपवित्र बन जाते हैं। इनको कहा जाता है रावण राज्य। रावण को वर्ष-वर्ष जलाते हैं, परन्तु जलता ही नहीं है। यह है सबका बड़ा दुश्मन, इसलिए उनको जलाने की रसम पड़ गई है। भारत का नम्बरवन दुश्मन है रावण और नम्बरवन दोस्त सदा सुख देने वाला है खुदा। खुदा को दोस्त कहते हैं ना। इस पर एक कहानी भी है तो खुदा है दोस्त। रावण है दुश्मन। खुदा दोस्त को कभी जलायेंगे नहीं। रावण दुश्मन है इसलिए 10 शीश वाला रावण बनाकर उनको वर्ष-वर्ष जलाते हैं। गांधी जी भी कहते थे हमें रामराज्य चाहिए। रामराज्य में है सुख, रावण राज्य में है दु:ख। अब यह कौन बैठ समझाते हैं? पतित-पावन बाप, शिवबाबा ब्रह्मा

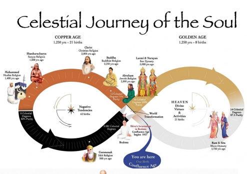

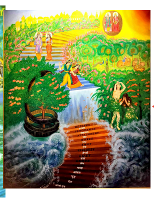

वो खुदा दोस्त है खिदमत में
हाजिर है हजार भुजाओं से
अपनी किस्मत के क्या कहने
सिर पर है हाथ दुआओं के
ऐसा साथी किसका होगा
ये सोच आंख भर आती है
भगवान हमारा साथी है

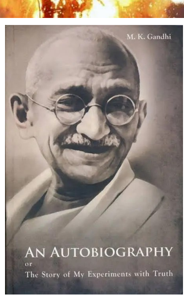

दादा। बाबा हमेशा सही करते हैं - बापदादा। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो सबका होगा, जिसको एडम कहा जाता है। उनको ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। मनुष्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण फिर ब्राह्मण सो देवी-देवता बनते हैं। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बन जाते हैं, इनको कहा जाता है प्रजापिता ब्रह्मा, मनुष्य सृष्टि का बड़ा। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। बाबा-बाबा कहते रहते हैं। यह है साकार बाबा। शिवबाबा है निराकार बाबा। गाया भी जाता है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई मनुष्य सृष्टि रचते हैं। यह है पतित दुनिया रावण राज्य। अब रावण की आसुरी दुनिया खत्म हो जायेगी, उसके लिए यह महाभारत लड़ाई है। फिर सतयुग में इस रावण दुश्मन को कोई जलायेंगे ही नहीं। रावण होगा ही नहीं। रावण ने ही यह दु:ख की दुनिया बनाई है। ऐसे नहीं जिनके पास पैसे बहुत हैं, बड़े-बड़े महल आदि हैं वह स्वर्ग में हैं। बाप समझाते हैं भल किसके पास करोड़ हैं, परन्तु शान्ति नहीं है, पैसे आदि तो सब मिट्टी में मिल जाने वाले हैं। नई दुनिया में फिर नई खानियां निकलती हैं, जिससे नई दुनिया के महल आदि सारे बनाये जाते हैं। यह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

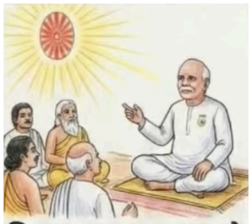

शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। (ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर)

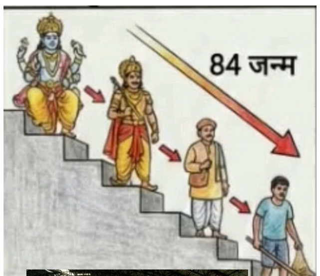

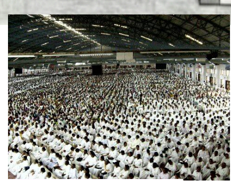

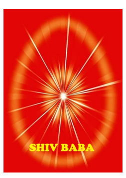

shutterstock.com · 2593674087

27. किनकी दबी रही धूल में, किनकी राजा खाए, किनकी चोर लूट ले जाए, किनकी आग जलाये, सफल होय उनकी जो धनी के नाम लगाये।
अन्त समय में स्थूल धन कई तरह से विनष्ट होगा लेकिन जो अपना

28 कहावतें और कहानियाँ

धन इस समय परमात्मा के कार्य में खर्च करते हैं उनका धन अनेक जन्मों के लिए सफल होता जाता है।

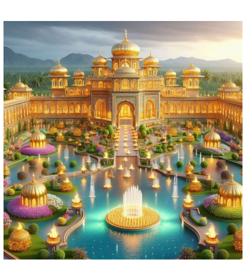

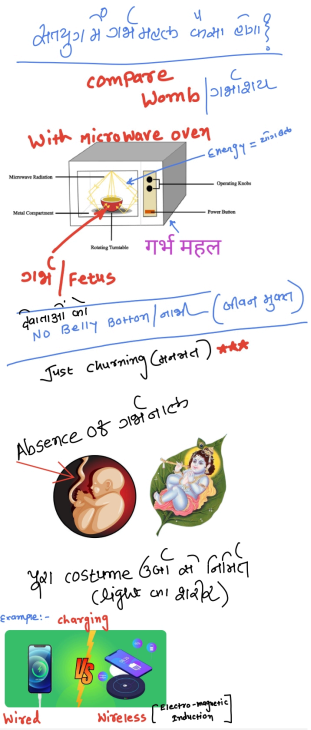

12-09-2026

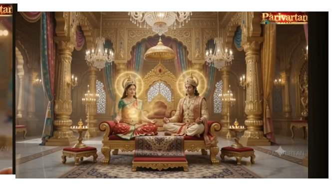

पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। सतयुग में है वाइसलेस सम्पूर्ण निर्विकारी। वहाँ बच्चे योगबल से पैदा होते हैं। विकार वहाँ होता ही नहीं। न देह-अभिमान, न क्रोध, न काम। 5 विकार होते ही नहीं इसलिए वहाँ कब रावण को जलाते ही नहीं। यहाँ तो रावण राज्य है, इसलिए सब पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। वह तो लिबरेटर भी है, सबका दु:ख हर्ता है। अभी सब रावण राज्य में हैं। बाप को आकर छुड़ाना पड़ता है।

अब बाप कहते हैं तुम पवित्र बनो। यह पतित दुनिया खत्म होनी है, जो श्रीमत पर चलेंगे वह श्रेष्ठ देवी-देवता बनेंगे। विनाश तो होगा, सब खत्म हो जायेंगे। बाकी कौन बचेंगे? जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं, वही बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही का वर्सा पाते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था ना। अभी तो रावण राज्य है जो खत्म होना है। सतयुगी रामराज्य स्थापन होना है। राम वह सीता वाला नहीं। लंका तो यह सारी दुनिया है, इसमें रावण का राज्य

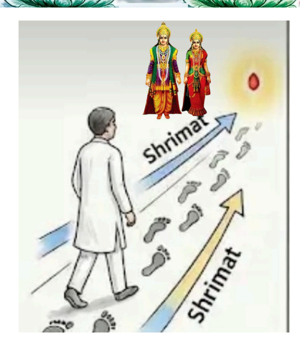

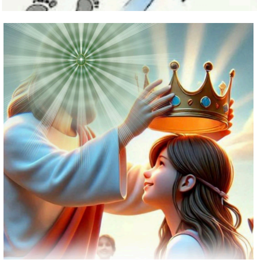

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

है। भारत सोने की चिड़िया था सतयुग में। जबकि दूसरा कोई राज्य ही नहीं था। बाप भारत में आकर फिर से सोने की चिड़िया स्वर्ग बनाते हैं। बाकी जो इतने धर्म हैं, सब खत्म हो जायेंगे। समुद्र भी उछल मारेगा। बाम्बे क्या था, एक छोटा सा गांवड़ा था।

अभी सतयुग की स्थापना होती है फिर बाम्बे आदि रहेगी नहीं। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। कैपिटल देहली होती है, जहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य होता है। देहली सतयुग में परिस्तान थी। देहली ही गद्दी थी। रामराज्य में भी देहली ही कैपिटल रहती है। परन्तु रामराज्य में हीरे जवाहरों के महल थे, अथाह सुख था। बाप कहते हैं तुमने विश्व का राज्य गँवाया है, मैं फिर से देता हूँ। तुम मेरी मत पर चलो। श्रेष्ठ बनना है तो सिर्फ मुझे ही याद करो और किसी देहधारी को याद नहीं करो। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे, तुम मेरे पास चले आयेंगे। तुम मेरे गले की माला बन फिर विष्णु के गले की माला बन जायेंगे। माला में ऊपर हूँ मैं। फिर युगल है ब्रह्मा-सरस्वती। वही सतयुग के महाराजा-महारानी बनते हैं। उन्हों की फिर सारी माला है जो नम्बरवार

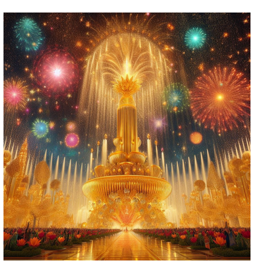

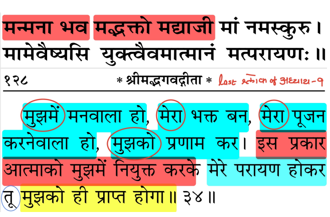
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायण:॥
१२८ * श्रीमद्भगवद्गीता *
मुझमें मनवाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करनेवाला हो, मुझको प्रणाम कर। इस प्रकार आत्माको मुझमें नियुक्त करके मेरे परायण होकर तू मुझको ही प्राप्त होगा॥ ३४॥

12-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

Shiv भगवान उवाच:

खुद में जो उलझा रह जाए
काम किसिके ना आये
वह जीना भी क्या जीना है
जो खुद में जीए और मर जाए।
रहे द्वार दया का सदा ही खुला
औरोका भला हो जाने दो
प्रभु प्रेम किरण को आने दो
आज चेतना के पट खोलो

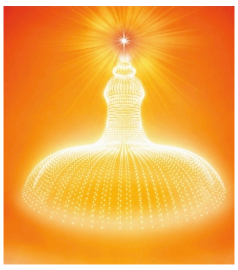

गद्दी पर बैठते हैं। मैं भारत को इन ब्रह्मा-सरस्वती और ब्राह्मणों द्वारा स्वर्ग बनाता हूँ। जो मेहनत करते हैं, उन्हों के फिर यादगार बनते हैं। आत्माओं का रहने का स्थान है परमधाम, जिसको ब्रह्माण्ड भी कहते हैं। हम सब आत्मायें वहाँ स्वीट होम में रहने वाली हैं - बाप के साथ। वह है शान्तिधाम, मनुष्य चाहते हैं - हम मुक्तिधाम में जायें। परन्तु वापिस कोई जा नहीं सकते। सबको पार्ट में आना ही है। तब तक बाप तुमको तैयार करते रहते हैं। तुम तैयार हो जायेंगे तो वहाँ जो भी आत्मायें हैं, वह सब आ जायेंगी, फिर खलास। तुम जाकर नई दुनिया में राज्य करेंगे फिर नम्बरवार चक्र चलेगा।

Simple Math..

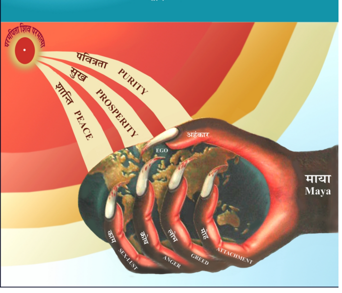

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

गीत में भी सुना है ना, आखिर वह दिन आया आज। भक्ति मार्ग में धक्के खाते रहते थे। बाप है ज्ञान सूर्य। ज्ञान सूर्य प्रगटा..... अभी तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। जानते हो जो भारतवासी नर्कवासी हैं वह फिर स्वर्गवासी बनेंगे। बाकी इतनी सब आत्मायें शान्तिधाम में चली

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

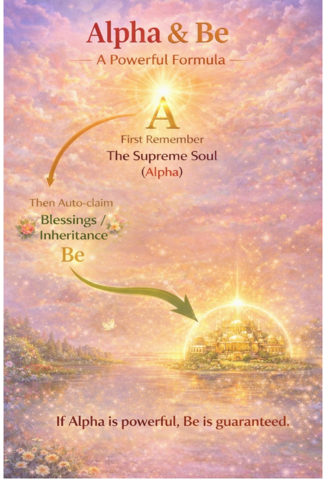

जायेंगी। समझाना बहुत थोड़ा है, अल्फ बाबा, बे बादशाही। अल्फ द्वारा बादशाही मिल जाती है। गदाई खत्म हो जाती है। उसकी कहानी बाप बैठ समझाते हैं। यह है सच्ची सत्य-नारायण की कथा। बाकी सब हैं दन्त कथायें। बाबा ही (Exclusive Authority of Shiv baba) नर से नारायण बनने के लिए यह ज्ञान सुनाते हैं। हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना। लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब शुरू हुआ, कब तक चला। तो कथा भी हुई ना! जो विश्व पर राज्य करते थे, वह 84 जन्म लेकर बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गये हैं।

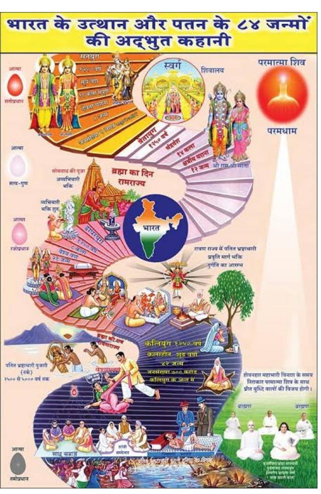

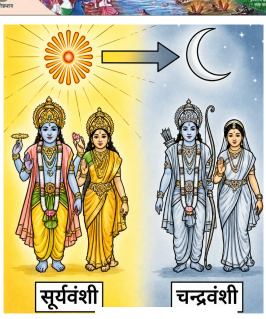

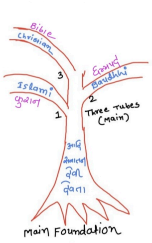

अभी बाप कहते हैं - मैं वही राज्य फिर से स्थापन करता हूँ। तुम कैसे पतित से पावन, पावन से पतित बनते हो - वह सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। पहले-पहले सूर्यवंशियों का राज्य फिर चन्द्रवंशियों का... उनके बीच दूसरे भी बौद्धी, इस्लामी फिर क्रिश्चियन आये। फिर वह देवी-देवता धर्म जो था सो गुम हो गया। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। शास्त्रों में ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष दिखाई हुई

Pandav Bhawan, Mt. Abu (Jan 1969): Funeral of Brahma baba

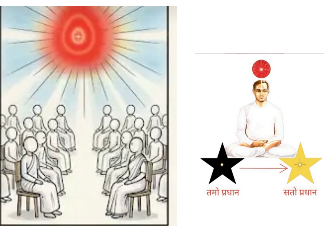

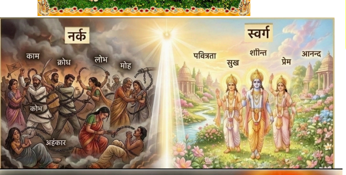

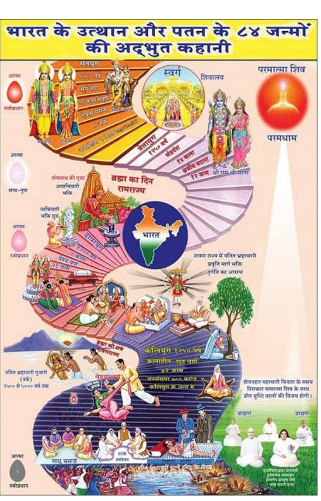

है। यह जो ब्रह्मा है, जिसमें बाप बैठ वर्सा देते हैं, इनका भी शरीर छूट जायेगा। आत्माओं को बैठ जो आत्माओं का बाप है वह सुनाते हैं, वही पतित-पावन है। मनुष्य; मनुष्य को पावन बना नहीं सकेंगे। जो

M.M.M.....imp.

खुद ही मुक्त नहीं हो सकते वह औरों को फिर कैसे करेंगे। वह तो सब भक्ति सिखलाने वाले अनेक गुरू हैं। कोई कहेंगे फलाने की भक्ति करो, कोई कहेंगे शास्त्र सुनो। अनेकानेक मत-मतान्तर हैं, इसलिए सब और ही बेसमझ बन गये हैं। अब बाप आकर समझदार बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण समझदार विश्व के मालिक थे ना। अब कितने कंगाल बन गये हैं। फिर शिवबाबा आकर नर्कवासी से स्वर्गवासी

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा... very Easy & clear

बनाते हैं। बाप कितना अच्छी तरह से समझाते हैं कि यहाँ तकदीर जग जाए। बाप आते ही हैं मनुष्य मात्र की तकदीर जगाने। सब पतित दु:खी हैं ना। सब त्राहि-त्राहि कर विनाश हो जायेंगे इसलिए बाबा कहते हैं त्राहि-त्राहि के पहले बेहद के बाप से कुछ वर्सा ले लो। यह जो कुछ दुनिया में देखते हो वह सब खत्म हो जाना है। फॉल ऑफ भारत, राइज़ ऑफ भारत। यह भारत का ही खेल है। राइज़ होगा सतयुग में। अब कलयुग में फॉल होना है। यह सब

जागो जागो, समय पहचानो...

12-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

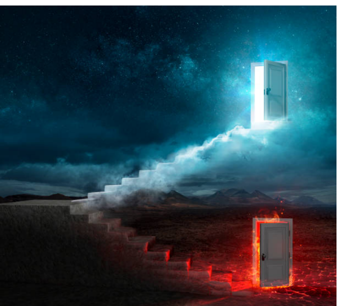

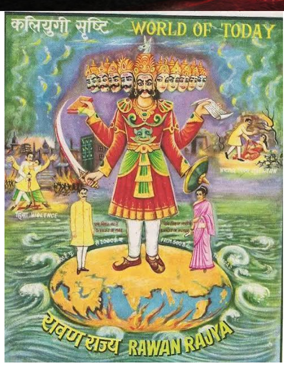

रावण राज्य का पॉम्प है। अब विनाश होना है। फॉल ऑफ वर्ल्ड, राइज़ ऑफ वर्ल्ड। सतयुग में कौन-कौन राज्य करते हैं, यह बाप बैठ समझाते हैं। राइज़ आफ भारत, देवताओं का राज्य। फॉल ऑफ भारत, रावण का राज्य। अभी नई दुनिया बन रही है। पुरानी दुनिया खत्म हो जायेगी। इसके पहले तुम पढ़ रहे हो, बाप से वर्सा लेने। कितना सहज है। यह है मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई। संन्यासियों का है ही निवृति मार्ग। वह धर्म ही अलग है। वह तो गृहस्थ व्यवहार छोड़ चले जाते हैं, उनका है हद का संन्यास। तुमको इस पुरानी दुनिया का संन्यास कर फिर यहाँ आना नहीं है। यह भी अच्छी रीति समझाना है, कौन-कौन से धर्म कब आते हैं। द्वापर के बाद ही और धर्म आते हैं। पहले सुख भोगते हैं फिर दु:ख। यह सारा चक्र बुद्धि में बिठाना होता है। जब से तुम चक्र में आते हो महाराजा-महारानी बनते हो। सिर्फ अल्फ और बे को समझाना है।

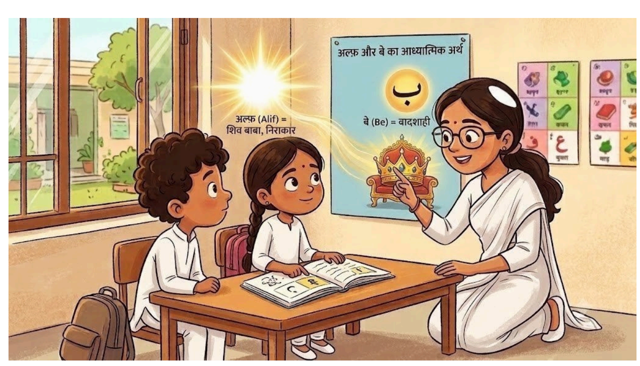

बाबा किसको विलायत में जाने की मना नहीं करते

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

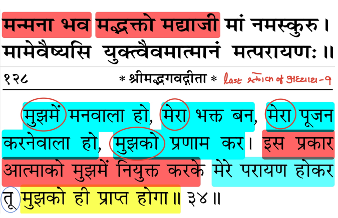

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥

१२८ * श्रीमद्भगवद्गीता * last श्लोक of अध्याय-9

मुझमें मनवाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करनेवाला हो, मुझको प्रणाम कर। इस प्रकार आत्माको मुझमें नियुक्त करके मेरे परायण होकर तू मुझको ही प्राप्त होगा॥ ३४॥

हैं। यूँ तो सब चाहते हैं कि मृत्यु अपने देश में ही हो। अब विनाश तो होना ही है, हंगामा इतना हो जायेगा जो विलायत से फिर आ भी नहीं सकेंगे इसलिए बाप समझाते हैं कि भारत भूमि सबसे उत्तम है, जहाँ बाप आकर अवतार लेते हैं। शिव जयन्ती भी मनाई जाती है। सिर्फ श्रीकृष्ण का नाम डालने से सारी महिमा ही खत्म हो गई है। सर्व मनुष्य मात्र का लिबरेटर यहाँ आकर अवतार लेते हैं। गॉड फादर ही है जो आकर लिबरेट करते हैं। तो ऐसे बाप को नमन करना चाहिए, उनकी जयन्ती मनानी चाहिए। परन्तु श्रीकृष्ण का नाम डालने से सारी वैल्यु गुम कर दी है। नहीं तो भारत सबसे ऊंच तीर्थ है। वह बाप यहाँ ही आकर सबको पावन बनाते हैं, तो यह सबसे बड़ा तीर्थ ठहरा। सबको दुर्गति से छुड़ाय सद्गति देते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। अभी तुम आत्मायें जानती हो, हमारा बाबा इस अपने शरीर द्वारा यह राज़ समझा रहे हैं। हम आत्मा इस शरीर द्वारा सुनती हैं। आत्म-अभिमानी बनना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो कट निकलती जायेगी और पवित्र बन तुम बाप के पास आ जायेंगे। जितना याद करेंगे उतना पवित्र बनेंगे, औरों को भी आप समान

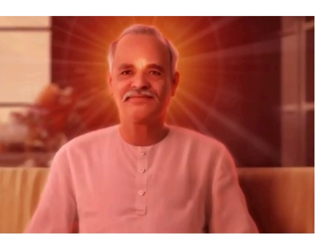

बनायेंगे तो बहुतों की आशीर्वाद मिलेगी। ऊंच पद पा लेंगे इसलिए गाया जाता है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

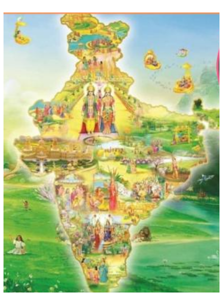

1) बाप के गले की माला बन विष्णु के गले में पिरोने के लिए सम्पूर्ण सतोप्रधान बनना है। एक बाप की मत पर चलना है।

2) ऐसी सेवा करनी है जो अनेक आत्माओं की आशीर्वाद मिलती रहे। त्राहि-त्राहि होने के पहले बाप से पूरा-पूरा वर्सा लेना है।

Method/Process/Instrument

12-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- स्नेही बनने के गुह्य रहस्य को समझ सर्व को राज़ी करने वाले राज़युक्त, योगयुक्त भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

जो बच्चे एक सर्वशक्तिमान् बाप के स्नेही बनकर रहते हैं वे सर्व आत्माओं के स्नेही स्वत: बन जाते हैं। इस गुह्य रहस्य को जो समझ लेते वह राजयुक्त, योगयुक्त वा दिव्यगुणों से युक्तियुक्त बन जाते हैं।

ऐसी राज़युक्त आत्मा सर्व आत्माओं को सहज ही राज़ी कर लेती है।

जो इस राज़ को नहीं जानते वे कभी अन्य को नाराज़ करते और कभी स्वयं नाराज रहते हैं इसलिए सदा स्नेही के राज़ को जान राजयुक्त बनो।

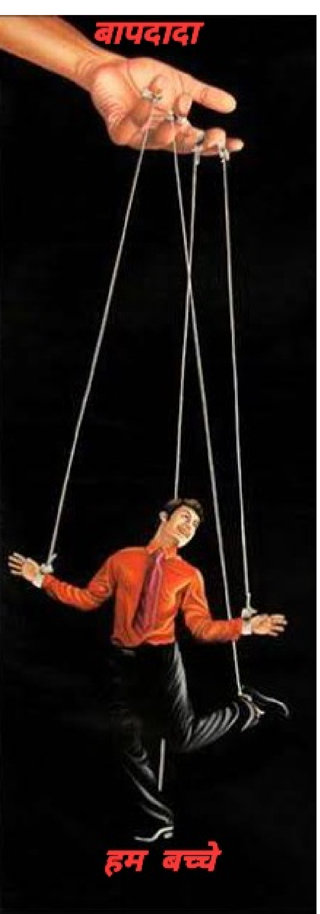

स्लोगन:- जो निमित्त हैं वह जिम्मेवारी सम्भालते भी सदा हल्के हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

12-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

जैसे बापदादा सदा बड़ी दिल वाले बेहद की दिल वाले हैं, इसलिए सर्व की दिल लेने वाले दिलाराम हैं,

ऐसे बच्चे भी बेहद की दिल फ्राकदिल दातापन की दिल रखने वाले, सदा दिल खुश से जहान को खुश करने वाली खुशनसीब आत्मायें हैं।

आप श्रेष्ठ आत्मायें ही जहान के आधार हो। Great Swamaan

आप सभी जगते, जागती ज्योत बनते तो जहान वाले भी जगते।

आप सबकी चढ़ती कला होती है तो सर्व आत्माओं का कल्याण हो जाता है।

"I am the master of this universe."
Most Powerful Soul in the Universe

We are the Foundation.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

11.10 वरदान दो :

समझा?

अमृतवेले चारों ओर के तमोगुणी वातावरण व वायब्रेशन के वायुमण्डल में प्राय: लोप स्थिति का समय होता है अर्थात् तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। ऐसे समय पर सहज ही पुकार सुनकर उपकार होता है। पुकार सुनना भी सहज है और उपकार करना भी सहज है। वरदान लेना भी सहज है और दान देना भी सहज है क्योंकि वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर, आप सर्व

ये पक्का समझ लो..

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

Point to be Noted

वरदानी आत्माओं की स्वयं की स्थिति भी, बाप की विशेष वरदानों की छत्रछाया के कारण बाप के समान सम्पन्न और दातापन की होती है। ब्रह्मलोक के निवासी बाप विशेष रूप से ज्ञानसूर्य की लाइट और माइट की किरणें विशेष बच्चों को वरदान के रूप में देते हैं। इसलिए इस समय को 'ब्रह्म-मुहूर्त' का समय कहते हैं।

पुछो अपने आप से...

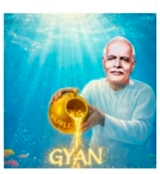

क्या इस समय पर आप स्वयं का सारे दिन की श्रेष्ठ स्थिति वा कर्म का 'मुहूर्त' निकालते हो ? जैसा मुहूर्त निकालना चाहो वह निकाल सकते हो। साथ-साथ अव्यक्त वतनवासी ब्रह्मा बाप भाग्यविधाता के रूप में अमृतवेले भाग्य अर्थात् अमृत बाँटते हैं। जितना भाग्य रूपी अमृत ब्रह्मा बाप द्वारा लेना चाहो वह ले सकते हो। लेकिन बुद्धि रूपी कलश अमृत धारण करने के योग्य हो। किसी भी प्रकार का विघ्न या रुकावट न हो। तो ऐसे समय पर लेना और देना साथ-साथ चलता है। वरदानी और महादानी दोनों पार्ट साथ-साथ चलते हैं। ऐसी स्थिति में स्थित होने वाली उपकारी आत्माओं को, आत्माओं की पुकार भी स्पष्ट सुनाई देगी। इतनी स्पष्ट सुनाई देगी जैसे कानों में कोई बात कह रहा है। भक्तों की आवाज़ भी सुनायी देगी। ऐसे समझेंगे जैसे यहाँ सचमुच कोई बुला रहे हैं। अमृतवेले विशेष (1) भक्तों की पुकार सुनो, (2) दु:खी आत्माओं के दु:ख की पुकार सुनो, (3) प्यासी आत्माओं के प्रार्थना की आवाज़ सुनो, तो कभी भी नींद नहीं आयेगी। समझा ?

**Conditions Applied Very strictly